प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के मूल्यों पर एक अध्ययन। A Study on the Value of Primary Level Teachers

(IJGASR) International Journal For Global Academic & Scientific Research
ISSN Number: 2583-3081
Volume 1, Issue No. 3, 29–37
© The Author 2022
journals.icapsr.com/index.php/ijgasr
DOI: 10.55938/ijgasr.v1i3.18
IJGASR

DR. Rani Kumari

सार :– मूल्य शिक्षा के सबसे प्रभावी रूपों में से एक है। हालाँकि, यह प्रणाली कई कारकों के कारण केवल विकसित देशों में लागू होती है। इस अध्ययन का उद्देश्य विकासशील देशों में मूल्य शिक्षा प्रणाली को लागू करने में सक्षम प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए एक विधि विकसित करना है। शिक्षक न केवल विज्ञान की नींव का ज्ञान देते हैं और किसी विशेषा क्षेत्र में विशिषट कौशल और प्रथाओं को विकसित करने में मदद करते हैं, बल्कि मूल्यों को भी धारण करते हैं। प्राथमिक विद्यालयों में यह अत्यंत महत्वपूर्ण है, जहां विश्वदृषिट के मूल सिंद्धातों का निर्माण होता है। लेकिन आधुनिक युग में शिक्षकों की स्थिति में गिरावट, उनके खराब प्रदर्शन और शिक्षण मूल्यों में गिरावट के लिए कई कारक जिम्मेदार हैं।

Abstract: - Values are one of the most effective forms of education. However, this system is applicable only in developed countries due to several factors. The objective of this study is to develop a methodology for training primary school teachers capable of implementing the value education system in developing countries. Teachers not only impart knowledge of science foundations and help develop specific skills and practices in a particular field, but also inculcate values. This is extremely important in primary schools, where the basic principles of the worldview are formed. But in the modern era many factors are responsible for the decline in the status of teachers, their poor performance and decline in teaching values.

कूँजी शब्द :– **प्राथमिक स्तर, शिक्षक, मूल्य, शिक्षा प्रणाली।**
Key words:- Primary stage, Teacher, Values, Education system

परिचय :– प्राथमिक स्तर के शिक्षक अपने शैक्षिक मूल्यों के विकास के स्थान पर

Received: 23 August 2022; **Revised:** 20 September 2022;
Accepted: 01 October 2022; **Published:** 13 October 2022

Assistant Professor, Thakur Durgpal Singh Memorial B.Ed. College, RRBM University, Alwar (Raj) India.

Corresponding Author:
Assistant Professor, Thakur Durgpal Singh Memorial B.Ed. College, RRBM University, Alwar (Raj) India.
Email: dr.rani@gmail.com

© 2022 by Dr. Rani Kumari Submitted for possible open access publication under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

राजनैतिक विषायों पर रूचि पूर्वक बढ चढ कर हिस्सा ले रहा है। यदि शोधकर्ता शिक्षक की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करते है तो पाते है कि अपने कार्य की अपेक्षा पद की संतुषिट, वेतन की संतुष्टि जरूर परिलक्षित होती है जबकि शिक्षा नीतियाँ शिक्षा सिद्ध ांत शिक्षा की प्रविधियाँ इत्यादि बालक में अन्तनिर्हित शक्तियों के सर्वोत्तम विकास कि लिए बनाई गई है किन्तु शिक्षक अपने शिक्षण को इस कदर नीरस बना रहा है कि छात्र मानसिक रूप से कक्षा में अनुपस्थित रहता है। परिणाम छात्र का अधिगम स्तर अवनति को प्राप्त है तथा छात्रों में सृजनशीलता की समाप्ति होती जा रही है। इसका एक और भयंकर परिणाम है कि छात्र बचपन से ही रटकर परीक्षा पास करना सीख जाता है। अपने आर्थिक विकास के लिए कुछ शिक्षक अभिभावकों के यहा बच्चों के ट्यूशन व कोचिंग भी पढ़ाने पहुँचते हैं लेकिन बच्चों का सांवेगिक विकास अवरूद्ध हो जाता है जिससे कुण्ठा से ग्रस्त बालक नन्हा प्रौढ़ बन जाता है।

शिक्षक एक प्रदर्शन गतिविधि है जो विद्यार्थियों को सीखने के अवसर प्रदान करता है। शिक्षक का उद्देश्य छात्रों को सीखना और उनके शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करना है। जब वह विद्यार्थियों के साथ काम करता है तो वह अलग – अलग भूमिकाएँ निभाता है, कभी वह एक दोस्त होता है तो कभी वह एक प्रशिक्षक, मार्गदर्शक और निर्देशक की भूमिका में होता है। इसलिए, शिक्षण को निर्णय लेने, निर्देशन, मार्गदर्शन और निर्देश के रूप में अभिव्यक्त किया जा सकता है। शिक्षण के प्रति शिक्षक के मूल्यों को उसके सही परिप्रेक्ष्य में समझने के लिए, यहाँ शिक्षण की कुछ परिभाषाओं का अध्ययन करना उचित प्रतीत होता है।

अहलूवालिया (1971) ने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने देखा कि एक शिक्षक के रूप में एक शिक्षक अपने कर्तव्य का पालन कैसे करता है, यह काफी हद तक उसके मूल्यों, मूल्यों और विश्वासों पर निर्भर करता है। शिक्षक का रवैया न केवल कक्षा में उसके व्यवहार को प्रभावित करता है बल्कि उसके छात्रों के व्यवहार को भी प्रभावित करता है। एक सकारात्मक अनुकूल रवैया न केवल काम को आसान बनाता है बल्कि अधिक संतोषाजनक और पेशेवर रूप से पुरस्कृत भी करता है।

छात्रों के प्रति प्राथमिक शिक्षकों के मूल्य :– कक्षा के माहौल को निर्धारित करने में छात्रों के प्रति शिक्षक का रवैया भी महत्वपूर्ण है। सीखने का माहौल व्यक्तिपरक है, और हम सभी यह निर्धारित करने के लिए बच्चों के तरीके को अपना लेते हैं, क्या एक शिक्षक "बच्चों को पसंद करता है" ? शिक्षक छात्रों की अपनी मान्यतायें भी भिन्न होते हैं। कुछ शिक्षकों का मानना है कि छात्र स्वाभाविक रूप से आलसी होते हैं, उनमें अनुशासन की कमी होती है, और उन्हें कडी मेहनत करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। इस विश्वास के परिणामस्वरूप, वे अपने छात्रों के प्रति रूढिवादी और निरंकुश रवैया अपनाते हैं। रूढिवादी – निरंकुश शिक्षक कक्षा में शिक्षकों के पारंपरिक अधिकार में विश्वास करते हैं : छात्रों को बिना असफलता के इस अधिकार का सम्मान करना चाहिए। दुर्व्यवहार करने वाले छात्रों को उनमें नैतिकता की भावना पैदा करने के लिए दंडित किया जाता है। पुरस्कार और दंड के लगातार उपयोग के माध्यम से कक्षा में एक दृढ अनुशासन बनाए रखा जाता है। छात्रों की व्यक्तिगत स्वायत्तता को प्रोत्साहित करने पर बहुत कम जोर दिया जाता है। इसके बजाय, छात्रों से उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करने की अपेक्षा की जाती है जो उनके शिक्षक ने उनके लिए निर्धारित किए हैं।

इसके विपरीत, अन्य शिक्षकों का मानना है कि प्रत्येक छात्र एक अद्वितीय व्यक्तित्व है जो सीखने के उद्देश्यों के लिए प्रतिबद्ध होने पर आत्म – निर्देशन और आत्म – नियंत्रण का प्रयोग करने में सक्षम है। इस विश्वास के परिणामस्वरूप, वे अपने छात्रों के प्रति उदार और लोकतांत्रिक मूल्यों अपनाते हैं। उदार – लोकतांत्रिक शिक्षकों का मानना है कि प्रत्येक छात्र में एक जन्मजात क्षमता होती है जिसे महसूस किया जा सकता है। वे इस आंतरिक क्षमता को साकार करने के लिए अपने छात्रों की सहायता करने के लिए

कड़ी मेहनत करते हैं। उदार लोकतांत्रिक शिक्षक अपने छात्रों के प्रति गर्मजोशी और विनम्र व्यवहार करते हैं, और उन्हें अपने लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वे छात्रों को डांटने या दंडित करने के बजाय दुर्व्यवहार करने वाले छात्रों से निपटने के लिए तर्क और नैतिक अनुनय का उपयोग करते हैं।

प्राथमिक विद्यालय शिक्षक प्रशिक्षण के समसामयिक मुद्दे :– संभावित प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के अध्ययन कार्यक्रमों के वर्तमान मुद्दों में से एक यह है कि छात्रों पर एक ओर, अध्ययन की "व्यापक रूप से विषाम" सामग्री के बोझ तले दब जाते हैं। दूसरी ओर, वे किसी भी सामग्री क्षेत्र के विशेषाज्ञ नहीं हैं। यह तर्क कि शिक्षक युवा शिक्षार्थियों को पढाने में विश**षज्ञ** और पेशेवर हैं और वे आजीवन सीखने के लिए आधार प्रदान करने वाले कौशल और क्षमताओं को बाहर लाने और विकसित करने में मदद करते हैं,।

एक अन्य मुद्दा इस तथ्य से संबंधित है कि प्राथमिक विद्यालय के सभी प्रशिक्षु शिक्षक पूरी तरह से योग्य शिक्षण में नहीं जाते हैं। उनमें से अधिकांश के पास प्राथमिक विद्यालय में विदेशी भाषाा पढ़ाने की योग्यता नहीं है। प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को विदेशी भाषाा शिक्षण में विशेषीकृत कार्यक्रम को पूरा करने में सफल होने वालों के पास ही यह योग्यता होती है। प्राग में शिक्षा संकाय में, प्राथमिक विद्यालय के सभी प्रशिक्षु शिक्षकों में से केवल 30% ही इस योग्यता को प्राप्त करते हैं।

तथ्य यह है कि आजीवन सीखने के भीतर आपकी प्राथमिक विद्यालय शिक्षण योग्यता को "पूर्ण" करना वास्तव में असंभव है, वर्तमान में एक दबाव वाले मुद्दे के रूप में देखा जा सकता है। प्राथमिक विद्यालय विस्तार कार्यक्रम केवल पूर्व – विद्यालय शिक्षाशास्त्र में स्नातकों के लिए या कुछ निम्न माध्यमिक विद्यालय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए डिजाइन किया गया है।

अकादमिक प्रेरणा पर सैद्धांतिक ढांचा :– अकादमिक प्रेरणा जटिल है, कई सिद्ध ांतों के साथ – साथ कई सत्यापन मानदंडों पर निर्भरता के आधार पर माप के लिए एक बहुभिन्नरूपी मूल्यों की मांग करना अकादमिक प्रेरणा है। प्रेरक सिद्धांतों को उपायों में बदलने के लिए पृषठभूमि के रूप में एक वैचारिक ढांचा प्रदान किया जाता है। ब्याज सिंद्ध ात, एट्रिब्यूशन सिद्धांत, और प्रत्याशा–मूल्य सिद्धांत का एक संस्करण, अकादमिक प्रेरणा का आकलन करने के लिए तीन नए स्व–रिपोर्ट उपकरण पेश किए गए हैं।

प्रेरणा उन कारणों को संदर्भित करती है जो व्यवहार को रेखांकित करते हैं जो इच्छा की विशेषाता है। आंतरिक प्रेरणा व्यक्तिगत आनंद, रूचि या आनंद से अनुप्राणित होती है, जबकि बाहरी प्रेरणा सुद्दढीकरण आकस्मिकताओं द्वारा नियंत्रित होती है। प्रेरणा में निकट से संबंधित विश्वासों, धारणाओं, मूल्यों, रूचियों और कार्यों का एक समूह शामिल है। व्यक्तियों के भीतर प्रेरणा विषाय क्षेत्रों में भिन्न होती है, और यह डोमेन विशिषटता उम्र के साथ बढती है। बच्चों में प्रेरणा जीवन में बाद में प्रेरणा की भविषयवाणी करती है, और इस रिश्ते की स्थिरता उम्र के साथ मजबूत होती है। परंपरागत रूप से, शिक्षक आंतरिक प्रेरणा को अधिक वांछनीय मानते हैं और इसके परिणामस्वरूप बाहरी प्रेरणा की तुलना में बेहतर सीखने के परिणाम प्राप्त होते हैं। सामान्य तौर पर, बच्चे उच्च 091A स्तर की आंतरिक प्रेरणा के साथ स्कूल में प्रवेश करते दिखाई देते हैं, हालांकि जैसे – जैसे बच्चे स्कूल के माध्यम से आगे बढ़ते हैं, प्रेरणा कम होती जाती है। लक्ष्य संरचनाओं, गुणों और बाहरी मूल्यांकन के संबंध में शिक्षकों को एक सहायक कक्षा वातावरण बनाना चाहिए। प्रेरणा का आकलन करने में कई चुनौतियाँ हैं, खासकर बच्चों में।

साहित्य की समीक्षा :– **क्लिफ्टन, एट अल (2004)**[1] ने "संकाय वातावरण, मना. `सामाजिक स्वभाव और शैक्षणिक उपलब्धि" पर एक अध्ययन किया। परिणाम बताते हैं कि संज्ञानात्मक मांगों और सामाजिक समर्थन दोनों ने छात्रों के कथित शैक्षणिक नियंत्रण और मुकाबला करने की रणनीतियों को प्रभावित किया। बदले में, शैक्षणिक वातावरण और मनोसामाजिक स्वभाव ने छात्र की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित किया।

माइकल के. जुशियाग और सुसान क्रान्स व्हाइटबोर्न (1994)[2] ने "कॉलेज के छात्रों की तीन पीढियों में मनोसामाजिक विकास" के बारे में अध्ययन किया। परिणामों ने संकेत दिया कि कॉलेज के वरिषठों में आमतौर पर अपने छोटे सहपाठियों की तुलना में उच्च विकास होता है। इसके अलावा, महिलाओं में आमतौर पर पुरूषों की तुलना में उच्च मनो – सामाजिक विकास स्कोर था। विकास के देखे गए पैटर्न में कोहोर्ट अंतर की कमी और कॉलेज की कक्षाओं में कोहोर्ट अंतर की न्यूनतम सीमा बताती है कि कॉलेज के दौरान व्यक्तिगत विकास सामाजिक परिवर्तन के दशकों में मनो – सामाजिक दबावों को स्थानांतरित करने से अपेक्षाकृत अप्रभावित है।

चेथम, एट अल (1990)[3] ने "अफ्रीकी–अमेरिकी कॉलेज के छात्रों के मनोसामाजिक विकास पर संस्थागत प्रभाव" पर एक अध्ययन किया। अध्ययन ने व्यापक रूप से रिपोर्ट किए गए विवाद की जांच की कि अफ्रीकी–अमेरिकी कॉलेज के छात्रों के सामाजिक और बौद्धिक विकास को पारंपरिक रूप से ब्लैक कॉलेजिएट संस्थानों (टीबीआई) द्वारा पूर्व–प्रमुख व्हाइट कॉलेजिएट संस्थानों (पीडब्ल्यूआई) की तुलना में बेहतर तरीके से पोषित किया जाता है। यह अनुमान लगाया गया था कि यदि रिपोर्ट किए गए पर्यावरण ीय प्रभाव मौजूद हैं, तो टीबीआई के छात्रों को पीडब्लूआई में अपने समकक्षों की तुलना में अधिक विकासात्मक रूप से उन्नत होना चाहिए। परिणामों ने अफ्रीकी–अमेरिकी कॉलेज के छात्रों के विकास को सुविधाजनक बनाने में टीबीआई की श्रेषठता के लिए स्पषट समर्थन प्रदान नही किया। परामर्श और भविषय के अनुसंधान के परिणामों और निहितार्थों पर चर्चा की गई।

विलार एंगुटो और लुइस मिगुएल (1987)[4] ने "मनोसामाजिक कक्षा के वातावरण का मूल्यांकन" के बारे में अध्ययन किया। यह निषकर्षा निकाला गया कि उपकरणों की वैधता का परीक्षण विश्वसनीयता, विभेदक वैधता और छात्रों के बीच कक्षाओं के बीच अंतर करने की क्षमता के संबंध में किया गया था। इन परिणामों का उपयोग शिक्षक प्रशिक्षण में सुधार के लिए किया जा सकता है।

पर्ल, हेरोल्ड (1986)[5] ने "छात्रों द्वारा मनोसामाजिक पर्यावरण की भविषयवाणी और धारणा" के बारे में अध्ययन किया। अध्ययन ने शुरूआती उम्मीदों की जांच की और नए प्रवेश करने वाले छात्रों (एन = 92) द्वारा रिपोर्ट की गई विश्वविद्यालय की रहने वाली इकाइयों की सामाजिक जलवायु की बाद की धारणाओं में पाया गया कि नए लोगों को अपने रहने वाले समूह के भविषय के सामाजिक माहौल की गलत उम्मीदें हैं। परिणामों में सक्रिय और निषिक्रय सामाजिक अन्वेषाण प्राथमिकताओं वाले छात्रों के बीच अंतर पाया गया।

जयंती, टी. (2004)[6] ने "मनोसामाजिक कारकों और शिक्षक प्रशिक्षुओं के बीच ग्रहणशील सीखने के कौशल को प्रभावित करने" पर एक अध्ययन किया। निषकर्षों ने संकेत दिया कि व्यक्तिगत विशेषाताओं, यानी उम्र, लिंग ने शिक्षक प्रशिक्षुओं के (ग्रहणशील) सीखने के कौशल को प्रभावित नहीं किया। संस्थागत वातावरण, संकाय वातावरण, शैक्षणिक वातावरण, धर्म, संस्कृति, सामाजिक आर्थिक स्थिति, सीखने की शैली, चिंता ने शिक्षक प्रशिक्षुओं के ग्रहणशील सीखने के कौशल का प्रभावित किया। व्यक्तित्व विशेषाता, आत्म – अवधारणा, सहिषणुता की विफलता ने इसे प्रभावित नहीं किया।

सिन्हा, आर.के. और भार्गव रजनी (1993)[7] ने "शैक्षणिक संस्थानों में सामाजिक भावनात्मक जलवायु के छात्रों की धारणा पर अभाव का प्रभाव" को प्रकट करने का प्रयास किया है। निषकर्षा इस प्रकार हैं : सामाजिक भावनात्मक वातावरण की धारणा और मनोवैज्ञानिक अभाव के विभिन्न घटकों के बीच संबंध के संबंध में, यह पाया गया कि अधि ाकांश मामलों में सभी प्रकार के स्कूलों के लिए कोई महत्वपूर्ण प्रभाव प्राप्त नहीं हुआ था।

गुप्ता, अरूण, के और श्रीनिवासन, नलिनी (1990)[8] ने "महिला शिक्षक प्रशिक्षुओं के मनो–सामाजिक और शैक्षणिक प्रोफाइल" पर एक अध्ययन किया। अध्ययन के परिणाम

निम्नलिखित हैं जहाँ तक महिला उम्मीदवारों का संबंध है, बी.टी.सी पाठ्यक्रम में शिक्षण पेशे और पर्यावरण की गुणवत्ता के प्रति मूल्यों में एक उल्लेखनीय बदलाव आया। बी. टी.सी. पाठ्यक्रम में शामिल होने के लिए प्रस्तुत किए गए कारणों से पता चला कि एक पेशे के रूप में शिक्षण को महिला बी.टी.सी. प्रशिक्षुओं की दृषिट में उच्च स्थान प्राप्त था। सेल्फ–इमेज सूची के अवलोकन से पता चला कि संभावित औसत महिला शिक्षिका के मेहनती, अनुशासित, आज्ञाकारी, ईमानदार और प्रतिबद्ध होने की संभावना थी।

आर.सी. श्रीवास्तव (1989)[9] ने "भारत में एक कॉलेज पर्यावरण के निर्माण की चुनौती" पर एक अध्ययन किया। भारतीय कॉलेज/विश्वविद्यालय पर्यावरण के नेतृत्व और प्रबंधन के क्षेत्र पर चर्चा की गई है। प्रशासन की विभिन्न शैलियों को शिक्षकों के साथ एक पेशेवर मुक्त संबंध बनाने की आवश्यकता पर विशेषा जोर देने के साथ संदर्भित किया जाता है। शिक्षण संस्थानों के सहायक प्राचार्यों को नेतृत्व कौशल प्राप्त करने के लिए विशेषा प्रशिक्षण की आवश्यकता व्यक्त की जाती है।

प्रकाशन डी. (1988)[10] ने "स्कूल संगठनात्मक जलवायु और शिक्षण योग्यता के एक कार्य के रूप में शिक्षक प्रभावशीलता" पर अपने अध्ययन में, निम्नलिखित पाया गया : स्कूल खोलने के लिए संगठनात्मक वातावरण ने शिक्षण क्षमता और प्रभावशीलता दोनों को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया। शहरी विद्यालयों के शिक्षकों ने अध्यापन योग्यता और शिक्षक प्रभावशीलता दोनों में अर्ध–शहरी और ग्रामीण विद्यालयों या औद्योगिक क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों में नियोजित शिक्षकों पर उल्लेखनीय रूप से उत्कृषट प्रदर्शन किया। महिलाओं ने सभी प्रकार के स्कूलों में नगण्य अंतर के साथ हमेशा उच्च अंक प्राप्त किए।

अध्ययन के उद्देश्य :– प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के मुल्यों का अध्ययन करना।

अनुसंधान क्रियाविधि :– वर्णनात्मक अध्ययन व्यक्तियों, समूहों, घटनाओं और अध्ययनों के संबंध में वर्तमान परिस्थितियों से संबंधित तथ्यों या साक्ष्यों को इकट्ठा करने का सुझाव देने के लिए प्रवृत्ति, सर्वेक्षण और स्थिति जैसे अभिव्यक्तियों को संदर्भित करता है। एक वर्णनात्मक अध्ययन यह पता लगाने के लिए उन्मुख है कि क्या आवश्यक है। इस अध्ययन में अनुसंधान की सर्वेक्षण पद्धति शामिल है।

सर्वेक्षण विधि एक महत्वपूर्ण विधि है जो सदी के मध्य से बहुत विकसित हुई है और कई उद्देश्यों के लिए मूल्यवान है। सर्वेक्षण का पता लगाने का आधार बन जाता है, कुछ मौजूदा मामलों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करता है, मुख्य विशेषाताओं का वर्णन करता है, जो अध्ययन में खोजा गया है। वर्तमान अध्ययन प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के मनोसामाजिक अध्ययन और छात्रों के प्रति शिक्षक के रवैये से संबंधित है। अन्वेषाक ने सर्वेक्षण पद्धति को इसलिए अपनाया क्योंकि यह आवश्यक और प्रासंगिक डेटा एकत्र करने के लिए उपयुक्त पाई गई थी।

अनुसंधान अभिकल्प :– वर्तमान अध्ययन प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के बीच मनोसामाजिक कारकों और व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रभाव को मापता है। चूंकि सर्वेक्षण आंकडों के सग्रंह के लिए सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली तकनीक है, यह शोध मानक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग करके प्रश्नावली के आधार पर किया गया है।

अनुसंधान अभिकल्प प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध को योजना, संरचना तथा व्यूह रचना प्रदान करेगा और प्रकरण नियन्त्रण में सहायक होगा, जिससे अनुसंधान प्रश्नों के उत्तर परिशुद्ध रूप से प्राप्त हो सकेगा। इसके दो रूप में –

- **संरचनात्मक** – संरचनात्मक में शोध विधि, न्यादर्श तथा न्यादर्श तकनीक का अध्ययन किया जायेगा।
- **संक्रियात्मक** – संक्रियात्मक के तहत शोध उपकरण तथा प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ आती हैं।

न्यादर्शविधि :– सैंपल में जिला मऊ के बीटीसी कॉलेज के प्राथमिक विद्यालयों में

कार्यरत शिक्षक शामिल थे। इसमें पुरूषा और महिला दोनों शिक्षक शामिल हैं। अध्ययन में चुनिंदा मऊ जिलों के 500 शिक्षकों का चयन किया गया। इस अध्ययन में यादृच्छिक प्रतिचयन तकनीक का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण :– वर्तमान शोधकर्ता ने इस अध्ययन के लिए आवश्यक डेटा एकत्र करने के लिए व्यक्तिगत और स्कूल से संबंधित डेटा शीट के साथ चार उपकरणों का उपयोग किया है। व्यक्तिगत और स्कूल से संबंधित डेटा का उद्देश्य स्कूल के शिक्षकों के लिंग, शिक्षक ग्रेड, धर्म, स्कूल का प्रकार, प्रबंधन का प्रकार, समुदाय, शिक्षण अनुभव और मासिक आय एकत्र करना है। उपकरण का विवरण नीचे दिया गया है।

शोध उपकरण :– निम्नलिखित मानवीकृत शोध उपकरणों का प्रयोग आँकड़ों के संकलन हेतु किया जाता है।

1- **व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली (पी.वी.क्यू.) :– जी.पी.शैरी और आर.पी.वर्मा**

अध्ययन के उद्देश्यों में निर्धारित आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए स्कोरिंग की नीति तैयार की गई थी। व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली, व्यावसायिक आकांक्षा पैमाने और व्यक्तिगत डेटा शीट का स्कोरिंग संबंधित मैनुअल में दिए गए निर्देशों के अनुसार किया गया था। व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली स्कोरिंग में।

शेरी एंड वर्मा (1988) द्वारा विकसित व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली (पीवीक्यू) का उपयोग किया गया था। PVQ में 10 उप डोमेन में 40 आइटम हैं अर्थात (1) धार्मिक, (2) सामाजिक, (3) लोकतांत्रिक, (4) सौंदर्य, (5) आर्थिक, (6) ज्ञान, (7) सुखवादी, (8) विश्वसनीयता शक्ति और (9) पारिवारिक प्रतिषठा और स्वास्थ्य मूल्यों और विश्वसनीयता गुणांक क्रमशः .64, .47, 48, 56, 70, 50, 63, 60, 67 और .52 थे। इस उपकरण का उपयोग कई शोधकर्ताओं द्वारा किया गया है, इसे मानकीकृत किया गया है (शेरी और वर्मा, 1988)।

सांख्यिकी विधियाँ :– इस अध्ययन में हम निम्नलिखित सांख्यिकीय उपकरणों का उपयोग कर रहे हैं :

- **औसत**
- **मानक विचलन**
- **टी – मान**

दत्तों का विश्लेषण :–

1- आप कैसे मुहल्ले में रहना पसन्द करेंगे/करेंगी ?

	उत्तरदाता (प्रतिशत)
जो कायदे से बसा हो और देखने में सुन्दर लगे।	215 (43%)
जहाँ आपके जैसे खानदान के पडोसी हों।	134 (26.8%)
जहाँ आप लोगों का नेतृत्व कर सकें।	151 (30.2%)
कुल	500 (100%)

उपरोक्त तालिका और ग्राफ से यह पता चलता है कि 43 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार जो कायदे से बसा हो और देखने में सुन्दर लगे। 26.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार जहाँ आपके जैसे खानदान के पडोसी हों। तथा 30.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार जहाँ आप लोगों का नेतृत्व कर सकें ऐसे मुहल्ले में रहना पसन्द करेंगे/करेंगी।

2- आप किसे अच्छा प्रशासक मानते/मानती हैं ?

	उत्तरदाता (प्रतिशत)
जिसमें सहानुभूति एवं दया हो।	166 (33.2%)
जो सख्त अनुशासन रखे।	175 (35%)
जिसे प्रशासन के सिद्धांतों का ज्ञान हो।	159 (31.8%)
कुल	500 (100%)

उपरोक्त तालिका और ग्राफ से यह पता चलता है कि 33.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार जिसमें सहानुभूति एवं दया हो। 35 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार जो सख्त अनुशासन रखे। तथा 31.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार जिसे प्रशासन के सिद्धांतों का ज्ञान हो। उन्हें वे अच्छा प्रशासक मानते/मानती हैं।

3- एक – एक लाख रूपया लॉटरी में इनाम पाने पर तीन व्यक्तियों ने उसका अधिकांश भाग निम्नलिखित तरीके से व्यय किया। आपके विचार में किसने ध न का अच्छा उपयोग किया।

	उत्तरदाता (प्रतिशत)
अपने सुख – सुविधा की सामग्रियों को खरीदने में।	115 (23%)
अपनी आय को बढाने के लिये पूँजी के रूप में लगाने में।	235 (47%)
अपनी जाति की तरक्की करने के लिये।	150 (30%)
कुल	500 (100%)

उपरोक्त तालिका और ग्राफ से यह पता चलता है कि 23 प्रतिशत उत्तरदाता अपने सुख – सुविधा की सामग्रियों को खरीदने में, 47 प्रतिशत उत्तरदाता अपनी आय को बढाने के लिये पूँजी के रूप में लगाने में, तथा 30 प्रतिशत उत्तरदाता अपनी जाति की तरक्की करने के लिये धन का अच्छा उपयोग किया।

तालिका : 1 प्राथमिक स्तर पर विशिषट वी0टी0सी0 तथा सामान्य वी0टी0सी0

अध्यापकों के मूल्यों के बीच सार्थक अन्तर नहीं है।

	एन	औसत	मानक विचलन	t - मान	स्तर का महत्व
विशिषट बीटीसी शिक्षक	250	256.3	21.5	0.118	0.05
प्रशिक्षित विशिषट बीटीसी शिक्षक	250	255.8	14.9		महत्वपूर्ण नहीं है

df = 58 के लिए, 0.05 महत्व के स्तर पर तालिका **t** – मान 2.00 है और परिकलित **t** – मान 0.118 है। परिकलित **t** – मान 0.118 तालिका **t** – मान 2.00 से कम है : अतः परिकल्पना – 2 अस्वीकृत की जाती है। इसलिए, यह अनुमान लगाया गया कि विशिषट और सामान्य बी.टी.सी. शिक्षकों के औसत स्कोर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

तालिका : 2 सामान्य बीटीसी शिक्षकों और प्रशिक्षित विशिषट बीटीसी शिक्षक के मूल्य।

	एन	औसत	मानक विचलन	t - मान	स्तर का महत्व
सामान्य बीटीसी शिक्षकों	250	232.2	19.5	5.09	0.05
प्रशिक्षित विशिषट बीटीसी शिक्षक	250	243.4	15.9		महत्वपूर्ण नहीं है

उपरोक्त तालिका बीटीसी के प्रतिशत के आधार पर शिक्षकों के मूल्यों पर आधारित है और विशेषा बीटीसी पुरूषा और महिला शिक्षकों की संख्या 14.87 है। मानक विचलन 19.5 से 15.9 है।

निष्कर्ष :– एक आदर्श शिक्षक ही जिसका जीवन मूल्यों का प्रकाशस्तंभ है, समाज को सही दिशा में ले जा सकता है। उसे आशावाद, प्रेरणा, सीखने और सिखाने की इच्छा, सत्य, अहिंसा, दूसरों के बारे में कभी न बोलने और बुरा सोचने, रचनात्मकता और बेपरवाह प्यार का प्रदर्शन करने की क्षमता जैसे आवश्यक मूल्यों का प्रदर्शन करना होगा। समाज में मानवीय मूल्यों का संवर्धन व्यक्तियों में अच्छे गुणों के प्रचार पर निर्भर करता है। हर परंपरा और हर देश में न केवल संस्था में बल्कि समाज में भी शिक्षक का स्थान गौरवान्वित किया गया है। मूल्य शिक्षा सिखाने वाले शिक्षकों को पहले नैतिक और मूल्य शिक्षा के ज्ञान को प्राप्त करना चाहिए और उसमें महारत हासिल करनी चाहिए। अगर वे किसी भी तरह इस मानक के पीछे हैं, तो हम मूल्य शिक्षा के उचित शिक्षण की उम्मीद कैसे कर सकते हैं।

संदर्भ :–

1- क्लिफ्टन, एट अल (2004) संकाय वातावरण मनोसामाजिक स्वभाव, और शैक्षणिक उपलब्धि, उच्च शिक्षा में अनुसंधान, खंड 45, संख्या 8, पीपी 801 –828।

2- माइकल के. जुशियाग और सुसान क्रान्स व्हाइटबोर्न (1994) कक्षा की स्थितियों के बारे में शिक्षक का मूल्यों, शैक्षिक प्रशासन के जर्नल, खंड 47, अंक : 3।

3- चेथम, एट अल (1990) संगठनों में संस्कृतियाँ, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क, पी.3.

4- विलार एंगुटो और लुइस मिगुएल (1987) शिक्षक शिक्षा नाइजीरिया के प्रति

नकारात्मक रवैये को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषाण, एरिक एजुकेशन, वी.126, एन.2, पीपी. 293–303।

5- पर्ल, हेरोल्ड (1986) तैयारी की गुणवत्ता पर एनसीटीएएफ की बैठक शिक्षण के लिए मजबूत शैक्षणिक तैयारी, जॉर्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय , अनुसंधान प्रकाशन।

6- जयंती, टी (2004) एक पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता का मूल्यांकन – उद्देश्य लेखन विकासात्मक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम, शिक्षा अनुसंधान में समकालीन मुद्दे – चौथी तिमाही, खंड नंबर 4।

7- सिन्हा, आर.के. और भार्गव रजनी (1993) शिक्षक सीखने पर वैश्विक मूल्यों : नीति और अभ्यास में सुधार, यूनेस्कों, आईआईईपी, पार्स।

8- गुप्ता, अरूण, के और श्रीनिवासन, नलिनी (1990) सामाजिक भावनात्मक स्कूल जलवायु, संपादक, साइकोलिंगुआ, अंकुर मनोवैज्ञानिक एजेंसी, 6 सर्वेक्षण, खंड।। ।

9- श्रीवास्तव, कांति मोहन (1982) शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की प्रभावशीलता। पीएचडी शिक्षा, अवध विश्वविद्यालय ।

10- प्रकाशन. डी. (1988), कॉलेज और विश्वविद्यालय सीखने का वातावरण शैक्षिक प्रशासन के जर्नल, खंड 3, अंक 2।

Reference:

1. Clifton, et al (2004) Faculty climate, psychosocial temperament, and academic achievement, Research in Higher Education, Vol. 45, No. 8, pp. 801 -828.
2. Michael K. Jushiag and Susan Crans Whitbourne (1994) Teacher's values regarding classroom situations, Journal of Educational Administration, Volume 47, Issue: 3.
3. Chetham, et al (1990) Cultures in Organisations, Oxford University Press, New York, p.3.
4. Villar Anguto and Luis Miguel (1987) An Analysis of Factors Affecting Negative Attitudes towards Teacher Education Nigeria, ERIC Education, v.126, n.2, pp. 293–303.
5. Pearl, Harold (1986) NCTAF meeting on the quality of preparation Strong Academic Preparation for Teaching, George Washington University, Research Publications.
6. Jayanthi, T (2004) Evaluating the Effectiveness of a Curriculum - Objective Writing Developmental Teacher Training Programme, Contemporary Issues in Education Research - Fourth Quarter, Vol.No.4.
7. Sinha, R.K. and Bhargava Rajani (1993) Global Values on Teacher Learning: Improving Policy and Practice, UNESCO, IIEP, Pars.
8. Gupta, Arun, K and Srinivasan, Nalini (1990) Socio-Emotional School Climate, Editor, Psycholingua, Ankur Psychological Agency, Survey 6, Vol. ,
9. Srivastava, Kanti Mohan (1982) Effectiveness of teacher education programmes. PhD Education, Avadh University.
10. Publication. D. (1988), College and University Learning Environments, Journal of Educational Administration, Volume 3, Issue 2.